नवम् मण्डल

शीतकालक रौद्र रूप अपन चरम पर पहुँचल छल। वायुमे किछु गति बढ़ियें गेल छलै।

गति बढ़ि गेल छल चारू अश्वारोहीकेर। चारू मौन भावें, वायु वेगें, अपन-अपन अश्व पर पूर्व दिशामे उड़ल जा रहल छल।

चारूकें शीत-प्रकोपक कोनो भय नञि छल, भय दोसरे छल। व्यग्रताक भाव सबमे छल।

व्यग्रता छल सोमास्तसँ पूर्वहि घुमबाक।

चारू नव निर्मित काष्ठ दुर्गक निकट पहुँचैत अछि। पश्चिमी पार्श्व लग पहुँचिकें अश्व गति किछु कम होइत अछि। ओहिमेंसँ एक अश्वारोही अश्वक पीठे परसँ दुर्गक काष्ठ पर पदाघात केलक।

काष्ठमे कोनो गति नञि भेल, अति गम्भीरतासँ गाड़ल गेल छल-से ज्ञात भ' गेल।

ओ सब शीघ्रतामे दुर्ग-वृत्तकें पूर्ण केलक आ पुनः पश्चिम दिशामे अश्वकें तीव्रताक संकेत देलक। थाकल रहितो गृह-दिशामे अश्व सब अति तीव्र भ' उठल।

सोमास्त भ' गेल छल। वन्यो सघनता कम भेल जा रहल छल आ पूर्व दिशामे भगवती उषा सेहो प्रकट भ' रहल छलि।

दृषद्वती लग अवैत-अवैत भगवान सविता मध्य आकाशमे आबि गेल छलाह।

अश्वारोही सब अति श्रान्तिसँ चूर्ण-विचूर्ण भ' रहल छल। अश्व सभक मुखसँ फेन बहरा रहल छलै, हाँफि रहल छल।

कर्मान्तिक दास सब दौड़ल।

सर्वप्रथम राजा असंगे अश्व परसँ उतरलाह तखन मंत्राक्ष, तखन आटव्य आ सर्वांतमे राजा अतिधृतिक पितृव्य-पुत्र वज्रनाभ।

यद्यपि वज्रनाभक आयु सबसँ अधिक छल, ओ अपन प्रौढ़ताकें समाप्त क' क' वृद्धावस्था दिस किछु दूर धरि चलो गेल छलाह, तथापि एहि तीनू युवासँ कम थाकल छलाह।

कर्मण्यता दृषद्वती तटक जीवन केर प्रमुख लक्षण थिक।

सरस्वती तट आ दृषद्वती तटमे स्थान-दूरी अधिक नञि अछि किन्तु काल दूरी अधिक अछि, जीवन दूरी अधिक अछि।

सरस्वती तटक ऋषिग्रामक अपन किछु विशेष भिन्न जीवन पद्धति अछि जाहिमे पूर्व आर्य जीवनक अधिक लक्षण-तत्व अछि, सङहि ब्राह्मण कर्मक प्रधानताक कारणे एकटा अपन भिन्न संस्कार परम्परा अछि।

दृषद्वतीक तट यद्यपि कुरु जनपदेक अंग थिक। कुरु विशः जनेक लोक आबि बसल अछि। किन्तु बसल अछि एक्के संग। एक्केठाम।

एहिठाम आर्य ग्रामांचल आ दस्युग्रामक भिन्न स्थिति नञि अछि। आर्य अनार्य एक्केठाम, एक ग्रामरूपमे बसल अछि। अनार्य दासकें एकाधिक गृहो बनेबाक अधिकार अछि। यद्यपि ई अधिकार देल नञि गेल, स्वतः अनायासे ई भाव जन्म ल' लेलक।

कृषि कार्यकें प्रारम्भमे आर्य जन नीक दृष्टिसँ नञि देखैत छलाह। राजनमे राजा अतिधृतिक रुचि कृषि विकास दिस अधिक छल, वैह एहिठाम एकटा कर्मान्तक निर्माण केलनि। आ कर्मान्तक अध्यक्ष बनाओल अपने कुलक अपन पितृव्य-पुत्र वज्रनाभकें।

सब एक दिससँ मीलि-जुलिकें बसि गेल। ग्रामणी स्वतः भ' गेलाह बज्रनाभे।

ऋषिग्रामसँ भिन्न, एहिठामक ऋषि-जीवनमे ब्राह्मण कर्मक प्रधानता घट' लागल आ कृषि कार्यक महत्त्व बढ़' लागल।

कृषि महत्वक प्रधानताक कारण भेल दृषद्वती तटक भूमि-उर्वरता।

दृषद्वती तटक समस्त आर्य जीवनमे मुख्यता भ' गेल कृषिकर्मक। आ से ऋषियो लोकनिमे।

प्रसन्न प्रायः सब ऋषिलोकनि वज्रनाभसँ। वज्रनाभे इहो निर्धारण करैत छथि जे कोन ऋषिकेर बटुकक आयु उपनयनक भ' गेल आ आब श्रुतिअभ्यास लेल सरस्वती तटक ऋषि ग्राम जेबाक चाही।